सम्पादक के नाम

सत्ताधारी दल अपनी चौतरफ़ा विफलताओं से बहुत निराश नहीं है!

उसे पूरा भरोसा है, 2019 की चुनावी जंग में "न्यूज चैनलों की ब्रिगेड" उसकी बड़ी ताकत होगी!

बुधवार की शाम हिन्दी-अंग्रेज़ी के कई चैनलों ने सन् 2016 के "सर्जिकल सट्टाइक" के जारी वीडियो को लेकर "खबरिया तूफान" खड़ा कर दिया! ऐसा लगा मानो, उनकी ख़बरों के निशाने पर पाकिस्तान नहीं, भारत का विपक्षी खेमा है! देश के सबसे बड़े मीडिया संस्थान से संचालित, संभवत: दुनिया के सर्वाधिक "चीखू चैनलों" में शुमार चैनल के प्रधान संपादक-प्राइम टाइम एंकर ने बताया कि उनके चैनल की इतनी बड़ी "एक्सकलूसिव" के दिन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी विदेश दौरे पर हैं। श्री गांधी को संबोधित करते हुए उस "वीर एंकर" ने कहा कि वो विदेश प्रवास में ही उक्त चैनल का %सर्जिकल सट्टाइक% सम्बन्धी वीडियो देखें और चैनल को जवाब दें!

कुछ अन्य चैनलों पर भी ऐसी ही %लड़ाई- भिड़ाई की बातें% चलती नजर आईं! बहस में एक टिप्पणीकार ने इस तरह के वीडियो जारी होने पर अचरज प्रकट किया, खासकर उसकी "टाइमिंग" को लेकर ! टिप्पणीकार ने इसके पीछे के "राजनीतिक मंसूबे" पर सवाल उठाना चाहा। लेकिन दोनों एंकरों ने उसे चुप करा दिया!

दूसरी तरफ, खबर आई कि संघ-भाजपा की साझा बैठक में कहा गया कि कुंभ मेले सहित ऐसे अन्य धार्मिक अवसरों का अपने पक्ष में भरपूर इस्तेमाल होना चाहिए! इसके अलावा यूपी सहित कई राज्यों के भाजपा नेता "अयोध्या में मंदिर" के निर्माण का भी ऐलान करते दिख रहे हैं!

मतलब साफ है, 2019 के संसदीय चुनाव में सत्ताधारी दल मुख्य रूप "धार्मिक-सांप्रदायिक उन्माद" और "सैन्य-राषट्रवाद" को अहम एजेंडा बनायेगा! उसके नेताओं, प्रचारकों और समर्थकों से भी ज्यादा जोरदार और प्रभावी अभियान चलाने में उसके साथ सैकड़ों चैनलों की ब्रिगेड होगी!

- उर्मिलेश उर्मिल

यम भारतीय पुराविद्या का बहुत महत्वपूर्ण चरित्र है

ऋग्वेद में यम-यमी का संवाद है,जिसमें यमी यम से रतिनिवेदन करती है।
उस समय नीतिशास्त्र का विकास प्रारम्भिक-अवस्था में था।
यम ने व्यवस्था देते हुए कहा कि भगिनी- रति अधर्म है।
इस प्रकार से यम लोकजीवन में नियम और संयम का उदाहरण बना।
अथर्व में यम मृत्यु का देवता है।
महाभारत में,पुराणों में यम को सूर्य-पुत्र कहा गया।
[यमलोक का मिथक उभरा। लोकपरिकल्पना का मिथक ।]]
कठोपनिषद में यम एक आचार्य है,जिससे नचिकेता मृत्यु के रहस्य के संबंध में संवाद करते हैं।
आगे चल कर यमी [जुड्वां बहन] के व्यक्तित्व पर यमुना का अध्यारोपण हुआ।इन्हें धर्मराज माना गया।
हम मनुष्य की महिमा से परिचित हैं तो यह बात स्पष्ट है कि मिथक की रचना भी लोकमन ने ही की है और आज भी उसे कहता-सुनता है।
मिथक के द्वारा क्या हम मनुष्य के मन को जान सकते हैं?
साइकोलौजी की साइकी भी तो मिथक ही है?

- राजीव रंजन चतुर्वेदी

पुरी मंदिर बदमाश पंडों की जागीर !

2007-2008 में लगभग 8 महीनो तक मैं भुबनेश्वर की एक शिक्षण संस्था में रहा ! मेरा एक परिचित मुझे पुरी ले गया !

वह और मैं दोनों ही नास्तिक थे और अभी भी हैं लेकिन कौतूहलवश हम दोनों पुरी का मंदिर अवश्य देखने गए !

अब चूंकि मुझे पूजा नहीं करनी थी इस लिए मैं कोई चढ़ावा ले कर नहीं गया और किसी भी पण्डे को साथ में नहीं लिया !

पुरी का मंदिर पंडों की जागीर है और पुरी के मंदिर में आपको पंडों से ज़रूर रूबरू होना पड़ेगा और अगर आप उसकी दक्षिणा भी नहीं दे रहे हैं तब आपको उसका खामियाज़ा भी ज़रूर भुगतना पड़ेगा। मुझसे एक लम्बे कद और शरीर में हरामखोरी की मोटाई लिए एक पांडा उलझ गया और दक्षिणा के लिए तकरार करने लगा ! मैंने उसे कुछ नहीं दिया तो वह मेरे पैर के एक अंगूठे पर चढ़ गया और उसे लगभग तोड़ डाला ! मुझे अगले तीन चार महीने लगंड़ा कर चलना पड़ा।

इतिहास बताता है कि पुरी का मंदिर आदिवासियों के स्थानीय देवता का मंदिर हुआ करता था जिसे ब्राह्मणो ने हिन्दू मंदिर बना लिया और उसके उपरान्त उसकी गणना हिन्दुओं की एक बड़ी पीठ के रूप में होती है और देश के अधिसंख्यक बेवकूफ़ श्रद्धालु वहाँ अपना चढ़ावा चढाने और पंडो से बेवकूफ बनने वहाँ जाते हैं।

इस देश की यह भी एक त्रासदी है!

- हरनाम सिंह वर्मा

प्रधनमन्त्री, मुख्यमंत्री कबीर जयंती में शरीक हुए

योगी ने चादर तो उढ़ाई पर टोपी पहनने से इनकार किया , अब वो इससे क्या संदेश प्रदेश की जनता को दे रहे थे ये तो वो ही जाने , पर स्टेटसमेन जैसी मुद्रा तो बिल्कुल नहीं थी. कुछ लोगों ने इसे 56 इंच का सीना भी कहा. पर कबीर तो हमारी चेतना में हमेशा से थे, जाति और धर्म से परे . किसी का तो योगदान रहा ही होगा इस चेतना को बनाने में, ये अलग बात है कि उसने इसका ढिंढोरा नहीं पीटा, मार्केटिंग नहीं की .

एक नये इतिहास का सृजन अवश्य हो गया कि कबीर, गुरूनानक एवं बाबा गोरखनाथ के मध्य आध्यात्मिक चर्चायें मगहर में ही हुई थीं ।

यह बात और है कि सब अलग अलग शताब्दियों में पैदा हुए थे।

मोदीजी ने आज यूपी के मगहर में अपने भाषण के दौरान कहा - गुरुनानक जी, बाबा गोरखनाथ और संत कबीर साथ बैठकर धर्म पर चर्चा किया करते थे

अब मजे देखो
बाबा गोरखनाथ का जन्म 10 वी शताब्दी में
संत कबीर का जन्म 1398 में
गुरुनानक जी का जन्म 1469 में
इसी बात पर दो पंक्तियाँ पेश है =

माना कि अंधेरा घना है
पर बेवकूफ बनाना कहाँ मना है,

- अनिल खेतान

मोदी राज में 15 से 20 करोड़ शौचालय तो चूहे भी खा सकते हैं!

गिरीश मालवीय का विश्लेषण

2 अक्टूबर 2014 को देशभर में एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई। महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को खुले में शौच से मुक्त करना इस योजना का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

मध्य प्रदेश सरकार, प्रदेश में कुल 122 लाख घर मानती है। जिसमें से सिर्फ 32 लाख घरों में शौचालय की उपलब्धता है। बाकी लोग खुले में शौच जाते हैं। इस तरह से स्वच्छ भारत अभियान के तहत 90 लाख घरों में शौचालय बनाना तय किया। यानी 10 हजार रुपए प्रति शौचालय भी मानें तो 9 हजार करोड़ से ज्यादा का खर्च है। जबकि अक्टूबर-2014 से दो हजार रुपए प्रति शौचालय और अतिरिक्त जुड़ेगे। कुल 90 लाख में से अब तक 36 लाख शौचालय बनाने का सरकारी दावा है। बाकी अभी बनने है।

बड़वानी में स्वच्छ भारत मिशन को डेढ़ करोड़ से ज्यादा की चपत लग गई है। पूरे स्वच्छता अभियान में घोटाले का खुलासा जिला पंचायत द्वारा कराई गई जांच में उजागर हुआ है। जांच दल ने सेधवा जनपद पंचायत की 38 ग्राम पंचायतों के पांच हजार से ज्यादा शौचालयों की जांच में करीब डेढ़ करोड़ का भ्रष्टाचार पाया है।

मध्य प्रदेश में भोपाल जिले की कालापानी पंचायत में ठेकेदार सैयद कबीर ने कथित तौर पर 400 शौचालयों को कागजों में बनाया दिखाकर पैसा ग्रामीणों के नाम पर निकाल लिया। गुना जिले के एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नियाज अहमद खान ने यहां स्वच्छ भारत मिशन के तहत बने करीब 42,000 शौचालयों के दरवाजों के निर्माण में अनियमितता पकड़ी है।

भोपाल में लक्ष्य पूरे करने की हड़बड़ी में आनन-फानन मॉड्यूलर टॉयलेट की मनमाने दामों पर खरीद में करोड़ों के वारे-न्यारे किए गए। भोपाल नगर निगम ने करीब छह करोड़ रुपए की लागत से 1,800 मॉड्यूलर टॉयलेट खरीद का प्रस्ताव रखा था, जिसमें एक ही कंपनी से 12,000 रुपए औसत कीमत वाले टॉयलेट 32,500 रुपए में खरीदे गए।

विदिशा में स्वच्छता योजना के तहत बनाए गए 1309 शौचालय लापता हैं। दस्तावेज बोलते हैं कि 1809 शौचालय बनाए गए हैं, परंतु फिजीकल वेरिफिकेशन में मात्र 500 ही मिले। 1309 शौचालय कहां गए, किसी को नहीं पता। इस शौचालय घोटाले का पता तब चला जब स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत वेब पोर्टल में शौचालय निर्माण से सम्बंधित जानकारी अपडेट करनी थी। वो भी हितग्राही के फोटो के साथ। इस मामले में सर्वे दल जांच करने निकला तो ये चौंकाने वाला मामला सामने आया। ऐसे ही पोजिशन लगभग हर जिले में है, कितने आंकड़े बताऊँ और आप कितना पढियेगा। ऐसा ही शौचालय घोटाला हर राज्य में है, लेकिन ये जब तक है कुछ सामने नही आएगा।

मध्य प्रदेश की जमीनी हकीकत यह है कि गर्मी का मौसम आते-आते आबादी का एक बड़ा हिस्सा पीने के पानी के लिये परेशान होने लगता है। प्रदेश के 30 हजार से ज्यादा गांवों में पेयजल संकट की स्थिति है। पीने को पानी नहीं है तो शौचालय में ढोलने को पानी कहां से लाया जाएगा। इसी समस्या को लेकर पिछले साल मध्य प्रदेश में एक महिला IAS अधिकारी ने शौचालय निर्माण के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह लगाता हुआ एक लेख लिखा तो उसे सरकार ने प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।

यह तो मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार की हकीकत है। मोदी जी के कारनामे पढिए, वो हकीकत जानिए जो 2017 में सामने आयी थी लेकिन उसके बारे में क्या किया गया किसी को कुछ पता नहीं है।

इस खबर के अनुसार वर्ल्ड बैंक ने मोदी सरकार की स्वच्छ भारत योजना को उस कर्ज को दिए जाने पर रोक लगा दी, जिसका उसने वादा किया था।

2015 में सैंक्शन किया गया यह स्वच्छ भारत के लिए लोन सोशल सेक्टर में वर्ल्ड बैंक की ओर से अभी तक की सबसे बड़ी लैडिंग था, जो राज्यों को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए दिया जाना था। लेकिन शर्त यह थी कि विभिन्न चरणों में वास्तविक परिणामों की स्वतंत्र जांच रिपोर्ट वर्ल्ड बैंक को सौपी जाएगी।

लेकिन 2017 में वर्ल्ड बैंक के एक अधिकारी ने बताया कि केंद्र सरकार पहली डेडलाइन को पूरा नहीं कर सकी थी और यह दूसरी डेडलाइन को भी चूक सकती है, क्योंकि मिनिस्ट्री ऑफ वॉटर सप्लाई ऐंड सेनिटेशन द्वारा इस लोन के लिए इंडिपेंडेंट सर्वे कराने का काम बहुत धीमी गति से चल रहा है और मिनिस्ट्री ने अभी तक इसके लिए कंसल्टेंट भी हायर नहीं किया है।

ये हकीकत है स्वच्छ भारत मिशन की, वैसे क्या भरोसा जिस तरह बिहार में चूहे बाँध की दीवार कुतर गए, ऐसे ही 15 से 20 करोड़ टॉयलेट भी तो चूहे खा ही सकते हैं।

... क्या आपने कभी किसी पर शक किया है?

शरद कोकास

अरे आप तो परेशानी में पड़ गए । किया भी हो तो कोई बात नहीं संदेह करना ज़रूरी है क्योंकि बिना संदेह के किया विश्वास अंद्धविश्वास के ज़्यादा करीब होता है । खैर..माफ कीजिये ऐसा कोई मेरा उद्देश्य नहीं था । चलिये दूसरा सवाल पूछता हूँ...

क्या कभी ऐसा कोई वाकया आपके साथ हुआ है कि अचानक कहीं कोई पुराना परिचित आपके सामने आ गया और उसने आप से पूछा "मुझे पहचाना?" और आप को तुरंत उसका नाम न याद आया हो ? यह तो पक्का हुआ होगा ।

दरअसल इन दोनों सवालों का सम्बन्ध मस्तिष्क के इसी तीसरे केंद्र के कार्य से है जिसका काम है छवि देखकर नाम या शब्द का निर्माण करना ।

जब भी हम पहली बार किसी वस्तु ,व्यक्ति ,या दृश्य को देखते हैं उसके नाम के साथ उसे रसायनों के रूप में मस्तिष्क में दर्ज कर लेते हैं और दोबारा जब उसे देखते हैं तो याद किये नाम को रिकॉल कर उसका नाम बता देते हैं । किंतु वास्तविकता यह है कि मस्तिष्क में वस्तु या व्यक्ति के साथ उसका नाम जोड़कर दर्ज करने की यह प्रक्रिया स्थायी नहीं होती।

जीवन में कई बार ऐसा होता है कि हमें बार बार याद करने पर भी किसी चीज का नाम याद नहीं आता यद्यपि वह नाम हमारी मेमोरी में रहता है । ऐसा ही लोगों के साथ भी होता है । अक्सर ऐसा होता है कि किसी समारोह में ,कहीं बाज़ार में हमारा कोई पुराना परिचित अचानक सामने आकर खड़ा हो जाता है और कहता है ..क्यों पहचाना ? "हम शर्म के मारे कह तो देते हैं, हाँ हाँ पहचान लिया लेकिन याद नहीं कर पाते कि वह कौन है ।

फिर क्या होता है?

फिर .. ऐसी स्थिति में मस्तिष्क तेज़ी से अपना यह काम शुरु करता है । मस्तिष्क की खोज प्रणाली प्रारम्भ हो जाती है और सर्चिंग करते हुए यह तेज़ी से अपनी पुरानी फाइलों में उस छवि का नाम ढूँढता है । और फिर अचानक किसी वस्तु को देखकर , उससे कोई बात सुनकर या अन्य किसी सन्दर्भ से हमें उसका नाम याद आ जाता है । जैसे वह कहता है कि ...शरद जी आजकल कहाँ हैं ? तो आप को याद आ जाता है..ओह शरद जी के साथ इनसे मिले थे लगता है यह भी कवि हैं ।

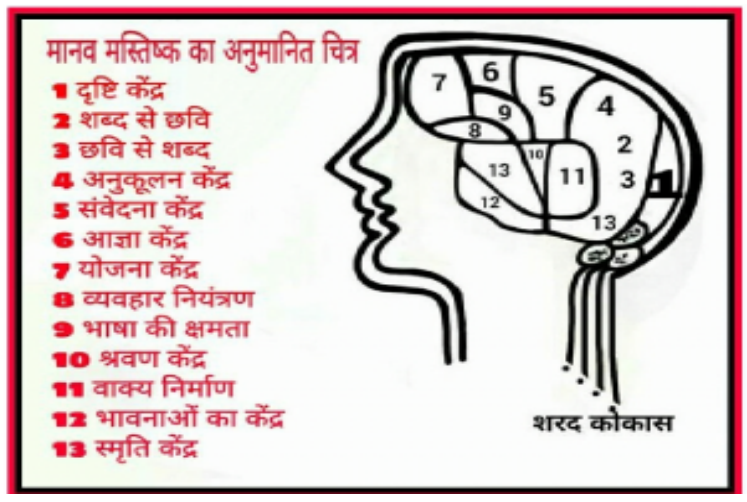

हम किसी वस्तु या व्यक्ति या स्थान का नाम कैसे याद करते हैं ।वस्तुत: हमारे मस्तिष्क में खो खो जैसा एक खेल चलता है । पहली बार किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर और उसे किसी नाम के साथ जोड़ने पर सर्वप्रथम एक संवेग मस्तिष्क में उत्पन्न होता है । फिर यह एक संवेग दूसरे संवेग को धक्का देता है दूसरा तीसरे को फिर अंतिम संवेग फिर सबसे पहले वाले को धक्का देता है और इस तरह एक चक्र पूरा होते ही हम उस बात , वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को नाम सहित याद कर लेते हैं । किंतु कुछ समय बाद कुछ घण्टे , कुछ दिन, महीने या साल के बाद यह खेल बीच मे ही रुक जाता है यानि यह चक्र या परावर्तन बीच मे ही टूट जाता है और हम उसे भूल जाते हैं लेकिन फिर बरसों बाद किसी सन्दर्भ में हमे वह भूली हुई बात याद आ जाती है ।

अब इसी प्रकरण में देखिए ।मान लीजिये आपको किसी भी तरह "मुझे पहचाना?" कहने वाले उस व्यक्ति का नाम याद ही नहीं आया तो आप घर जाकर पत्नी से या किसी मित्र से पूछते है और उसके यह पूछने पर कि वह किसके जैसा दिखाई है आप उसका हुलिया बताते हुए कहते है.. वह कॉलेज वाले शर्मा जी जैसा दिखता है । इस बात पर फिर तुरंत आपकी पत्नी या मित्र कहता है अच्छा तो पक्का वह पाण्डे जी होंगे ।

बस इस बीच मस्तिष्क से संकेत आने शुरू हो जाते हैं और परावर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है और आप को उस व्यक्ति की छवि और उसका नाम याद आ जाता है । यह बात अलग है कि इसके बाद आप पत्नी से पूछते है "लेकिन तुम उन्हें कैसे जानती हो ?" और पत्नी जब तक यह नहीं कहती कि "वो मेरे मायके से है और मैं उन्हें भाई मानती हूँ", तब तक आपको चैन नहीं आता । (क्षमा करें , यह उदाहरण सहज विनोद हेतु एक्सक्लूज़िवली शक करने वाले पुरुषों के लिए)

मुफ्त की सलाह

वैसे इसमें परेशानी की तो कोई बात नही है लेकिनअगर आपको भूलने की कुछ ज़्यादा ही आदत है और जल्दी से कुछ भी याद नही आता तो विस्मरण के इस दोष से मुक्ति पाने के लिए एक उपाय आप कर सकते हैं । जी हाँ इसके लिए अच्छा साहित्य पढ़ने की आवश्यकता है , आप अच्छी साहित्यिक कहानियां पढ़ें , अच्छी कविताएँ पढ़ें , लेख पढ़ें । यकीन कीजिये, आपकी स्मरणशक्ति बढ़ जाएगी ।